10

अब हम अमर

अब हम अमर भये न मरेंगे,
या कारन मिथ्यात्व दियो तज, क्यों करि देह धरेंगे ।।टेक।।

उपजे मरे काल तैं प्राणी, तातें काल हरेंगे।
राग–द्वेष जग बंध करत है, इनको नाश करेंगे ।।१।।

देह विनाशी मैं अविनाशी, भेदज्ञान पकरेंगे।
नासी जासी हम थिरवासी, चोखे व्है निखरेंगे ।।२।।

मरे अनन्त वार बिन समझे, अब सब दुःख विसरेंगे।
"द्यानत" निपट–निकट दो अक्षर, बिन सुमरे सुमरेंगे ।।३।।

अपने आत्म स्वरूप का भान होने पर साधक जीव कहता है कि मैं तो अजर–अमर तत्त्व हूँ, मेरा कभी विनाश नहीं होता क्योंकि जिस मिथ्यात्व के कारण यह संसार मिलता है मैंने उस मिथ्यात्व को ही नष्ट कर दिया है तो अब पुन: इस देह का संयोग मुझे कैसे होगा?

काल द्रव्य के परिणमन के कारण प्राणी जन्म–मरण का चक्र करता है। अब हम अपने निज शुद्ध स्वरूप में ठहरकर इस काल की पराधीनता से अर्थात् जन्म–मरण से मुक्त हो जायेंगे तथा जो राग–द्वेष जगत में बंधन के कारण हैं, उनका हम नाश करेंगे।

यह देह तो नाशवान है और मैं अविनाशी तत्त्व हूँ –हम इस भेदज्ञान को समझकर ग्रहण करेंगे। यह देह तो नाशवान होने से नष्ट हो जायेगी और यह आतमा सदा काल रहने वाला है, अत: ऐसे भेदज्ञान में डूबकर हम निर्मल शुद्ध रूप में निखर जायेंगे।

कवि द्यानतरायजी कहते हैं कि अभी तक हमने आत्म स्वरूप को समझे बिना अनन्त बार जन्म–मरण धारण किया अत: अब उन सब दु:खों को भूलकर केवल दो अक्षर 'सोहं' (मैं वह सिद्ध स्वरूप हूँ) का ही निरंतर सुमिरण करेंगे अर्थात् उस शाश्वत रूप की ही पहचान और प्रतीति करेंगे।